

दि आक्सफोर्ड कॉलेज आफ संइंस

नाम : काव्य श्री रौ.स

कक्षा : बि.एस.सी तीसरी भेंग ईश्व.रम
सीरास

विषय : ग्लोबल वार्सिंग

पंजीकरण संख्या : 19RNS85299

कौ प्रभुत : हिंदी विभाग

-डॉ भुज्या शाठोडु

INDEX

SNo	TOPIC	Pg No
1	हालीवल वार्मिंग	1-2
2	हालीवल वार्मिंग के कारण	2-4
3	हालीवल वार्मिंग के प्रभाव	4-
4	CO_2 का प्रभाव	5-6
5	घातक परिणाम	6-
6	हालीवल वार्मिंग का समाधान / शैक्षन का उपाय	7
7	निष्कर्ष	8

हलोकल वामिंग

पृथ्वी के सतह पर औसतन तापमान का बदला हलोकल वामिंग कहलाता है। हलोकल वामिंग मुख्य रूप से मानव प्रेषक काले के कारण होता है। औदारीकारण में ग्रीष्म हाउस गेसों का अधियंत्रित उत्सर्जन तथा जीवारम इंधन का खेलना हलोकल वामिंग का मुख्य कारण है। यहाँ हाउस गेस वायुमंडल के द्वारा की गर्मी की वापस जाने से दौड़ता है यह एक प्रकार के प्रभाव है जिसे "ग्रीन हाउस गेस प्रभाव" के नाम से जाना जाता है। इसके फलस्वरूप पृथ्वी के सतह पर तापमान बढ़ रहा है। पृथ्वी के बढ़ते तापमान के फलस्वरूप पर्यावरण प्रभावित होता है अतः इस पर ध्यान देना आवश्यक है।

हलोकल वामिंग पृथ्वी के तापमान के स्थिर और दृष्टि है। दुनिया भर में इंसान की कुछ ध्यान देने वाले आदती के कारण पृथ्वी की सतह दिन-ब-दिन गर्म होती जा रही है। हलोकल वामिंग पृथ्वी के वायुमंडल के लिए सबसे अधिक चिंता का विषय बन गया है। वज्रों की यह निरंतर और स्थिर मिश्रवट प्रक्रिया के माध्यम से पृथ्वी पर दिन प्रतिदिन जीवन की संभावनाओं की कम कर रहा है। फिर से यह समुद्र के बढ़ते स्तर बाढ़ कृष्णान्, घरवात्, औजीन परत की धाति, मौसम के बदलती मिजाज, महामारी के शीगों की आगंका, भौजन की कमी, मृत्यु आदि के कारण बन जाता है।

हरा छासके लिए किसी राक छकाई की दीप नहीं है सकते। हर छंसान जलोन्त वामिरा के बढ़ते अतटे किंतु जिमीदार है जिसे केवल वैज्ञानिक खासात्मका और सभी के प्रयासों से हल किया जा सकता है।

जलोबल वामिरा के कारण

जलोबल वामिरा के कारण हीने वाली जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे आधिक जिमीदार मान हाउस में है। ग्रीन हाउस गैस वे गैस हीने हैं जो बाहर से मिल जाए हैं या अम्भा के अपने अंदर सौख लाते हैं। ग्रीन हाउस गैसों का इस्तेमाल सामान्यतः अत्याधिक शर्द छाकों में उन पौधों की गर्म रखने के लिए किया जाता है जो अत्याधिक शर्द मौसम में बराब दी जाते हैं। ये में इन पौधों के काँच के घर में ग्रीन हाउस गैस भर की जाती। यह गैस सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी भौतक लाती है और पौधों की गर्म रखती है। ठीक यही प्रक्रिया पृथकी के साथ होती है। सूरज से आने वाली किरणों की गर्मी की कुछ मात्रा को पृथकी द्वारा सौख लिए जाता है। इस प्रक्रिया में हमारे पर्यावरण में कोई ग्रीन हाउस गैसों का महत्वपूर्ण योगदान है।

ग्रीन हाउस गैसों में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण गैस कार्बन डाइऑक्साइड है, जिसे हम जीवित प्राणी उपने साँस के साथ उत्सर्जित करते हैं। पर्यावरण वैज्ञानिकों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में पृथकी पर कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂) गैस की मात्रा लगातार बढ़ी है। वैज्ञानिकों द्वारा CO₂ के असरों और तापमान वृद्धि में जहरा सम्बन्ध बताया जाता है।

जून 2006 में राक्ष कुंकशुमीद्री फिल्म तापमान वृद्धि और कार्बन उत्सर्जन पर केंद्रित थी। इस फिल्म में मुख्य अभियोग के थे - अमेरिकी उपशाहूपति, अल गोर और इस फिल्म का निरूपण डिविड ग्राहम ने किया था। इस फिल्म में निरूपण ग्राहम वार्मिंग को राक्ष विभीषिक की तरह दर्शाया गया, जिसका प्रमुख कारण मानव गतिविधि खनित कार्बन वार्मिंग को राक्ष विभीषिक की तरह दर्शाया गया, जिसका कारण मानव गतिविधि खनित कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) में साना हाया।

भारतीय अंतरिक्ष राजेसी द्वारा इसके के पूर्व चैय -
मौन और भौतिकविद् प्रौद्य आर राव अपने गोद
पत्र में लिखते हैं कि अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आपत्ति ही
रहा है। अगर सूरज की क्रियाशीलता से अनी वाले की विकिरण नियंत्रण के बढ़ाण द्वारा की जाए तो विकास के
निर्माण में प्रमुख अभियोग निभाता है। इस बात की
पेशकश सबसे पहले स्कैनसमाकै और क्रिस्टल्सन नामक
वैज्ञानिकों ने की थी। नियंत्रण स्तर के बाद सूरज से अनी
वाले विकिरण की प्रावर्तित कर देते हैं। जिस कारण से
पृथ्वी पर सूरज से अनी वाले विकिरण के साथ
आई गमी भी प्रावर्तित होकर ब्लॉड में वापस
चली जाती है,

वैज्ञानिकों ने पाया कि सन् 1925 से सूरज की क्रिया
शीलता में लगातार वृद्धि हुई। जिसके कारण पृथ्वी पर
आपत्ति होने वाले कौशिक विकिरण में लगभग १ प्रतिशत
जमी आई है। इस विकिरण में आई कमी से पृथ्वी
पर बनने वाले वायर तरह के नियंत्रण स्तर के बादलों

के निर्माण में भी कमी आई है, जिससे सुरक्षा से आने वाला विकिरण भौतिक लिया जाता है और इस कारण से पृथकी के तापमान में वृद्धि का अनुग्राह लगाया जा सकता है। प्रो. शर्व के विष्टर्ष के अनुसार हल्लीबल वार्मिंग में इस प्रक्रिया का 50 प्रतिशत योगदान है जबकि काँचीक विकिरण संरचनाएँ जलवायु ताप की प्रक्रिया मानव गतिविधि जनित नहीं हैं और ना ही मानव इसे संचालित कर सकता है। इस तरह यह शीघ्र आई पी.सी. के इस विष्टर्ष का खंडन करता है कि हल्लीबल वार्मिंग में 90 प्रतिशत योगदात मानव का है। अगर हल्लीबल वार्मिंग के अन्य कारणों का अध्ययन किया जारा तो हल्लीबल वार्मिंग में मानव गतिविधियों का योगदात आई पी.सी.सी. की रिपोर्ट की अपेक्षा बहुत कम होगा।

प्रो. शर्व के इस शीघ्र-पत्र के प्रकाशन के ठीक दो दिन बाद विश्व के प्रख्यात वैज्ञानिक जर्नल नैचर में युनिपस्थिटी ऑफ लाइस के प्रो. रान्धव शेफर्ड का शीघ्र-पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें कहा गया है कि ग्रीनलॉड की वर्फ की पिघलानी में उस समय से कही अधिक समय लगीगा जितना की आई.पी.सी.सी. की चौथी रिपोर्ट में कहा गया है। ट्रैडिशन शेफर्ड अपने शीघ्र-पत्र में लिखते हैं कि ग्रीनलॉड की वर्फ अपेक्षाकृत शुरू कित है, उसी पिघलानी में काफी बहुत लगीगा। अन् 1999 में डॉ. वी.की. रैना ने अपने शीघ्र के लैंस पाया था कि हिमालय हल्लीबियर में अपेक्षाकृत शुरू कित है।

इत्योंकि, प्रौढ़ शब्द के इस गीदा के प्रमुख आधार कॉस्मिक विकिरण और नियन्त्रित स्तर के बादलों की निर्माण प्रक्रिया के बीच के अन्तः सम्बन्धों पर कुछ वैज्ञानिकों ने इस दिग्गज में गीदा भी किए महार अव तक अंतरिक्ष में पृथकी पर आपत्ति ही है कॉस्मिक विकिरण और पृथकी पर नियन्त्रित स्तर के बादलों की निर्माण के अन्तः सम्बन्धों पर विष के सभी वैज्ञानिकों में आम सह मति नहीं बन पाई है। यहाँ यहाँ जगता भी खूबी है कि हस पुरे मुद्दे पर भही निपूष्ट पर पहुँचने के लिये 'यूरोपीय नाभिकीय अनुसंधान संगठन (CERN) के 'लार्ज हैड्रोन कोल्लाडर' की सहायता से वैज्ञानिकों ने प्रयोगों की रास्ते शुरू करने का निर्णय लिया है। यह प्रयोग अभी हाल ही में प्रारम्भ हुआ है और ऐसी आशा है कि परिणाम आने जल्दी अंडे ही जारी हो। हस प्रौजेक्ट की कोस्मिक (cosmic learning outdoor) का नाम दिया है। इस प्रौजेक्ट में कॉस्मिक विकिरण का पृथकी पर बादलों के बनते की प्रक्रिया पर प्रभाव, जलवाया परिवर्तन पर प्रभाव आदि विषयों पर अध्ययन और गीदा किया जा रहा है।

हलोवल वार्मिंग के प्रभाव

हलोवल वार्मिंग के स्तरीय में वृद्धि से साफ तरीके पर हलोवल वार्मिंग के प्रभाव देख जा सकता है। (उस Geological Survey के अनुसार मीटाना हलोवियर नेशनल पार्क पर 150 हलोवियर मीजुद थे पर हलोवल वार्मिंग के बजह से वर्तमान में मात्र ७५ हलोवियर बचे हैं। आधिक स्तर पर जलवायु में परिवर्तन तथा तापमान से उपरी लोकर तूफान आधिक खतरनाक, गलिगाली और मेखबूत बन जाते हैं। २०१२ की १८८५ के बाद सबसे गर्म वर्ष दर्ज किया है।

हलोवल वार्मिंग के प्रभाव वातावरण के जलवायु में बढ़ती गर्मी का मौसम का हीला हंडका मौसम, वर्ष के घट्टानी का पिघलना, तापमान का बढ़ना, हवा परिसंचय पेटर्न में बदलव विन मौसम के वर्ष का हीला औजाने परत में छेद, भारी तूफान की घटना, घन्कवात, सूखा, बाढ़ और इसी तरह के अनेक प्रभाव हैं।

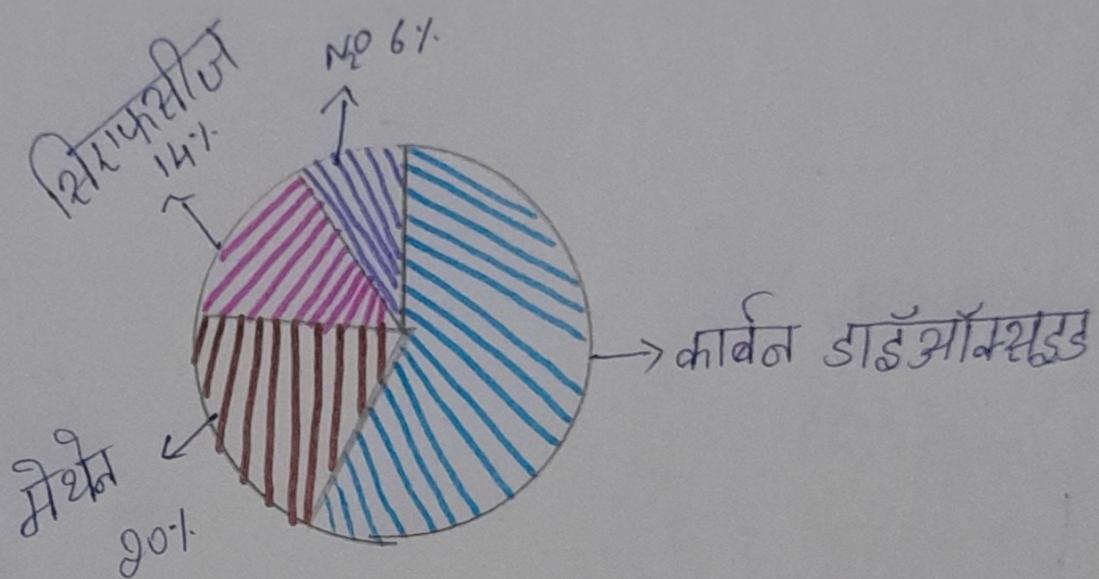
वातावरण पर कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) का हानिकारण

प्रभाव

पृथ्वी पर CO_2 में वृद्धि होती है, जिससे ऊषा तथा ठंडी का बदला गया लड़ता है, तेज पुफान की अगामी घटना, अप्रवाहित और अनचाहे चक्रवात और जल पर्यावरण की तुकाराम पहुंचना, बाढ़, मारी, बारिस, भूखा, भौजन की कमी, बीमारी तथा मृत्यु इत्यादि मानव जीवन पर काफी दूर तक प्रभाव होता है। जीवाज्ञा उद्घाटन के दौरान, उर्वरकों की उपयोग की कीठाना, विजली की अत्यधिक खपत, किंज में उपयोग होनेवाली ऐसा इत्यादि के कारणवश वातावरण में CO_2 का अत्यधिक उत्सर्जन हो रहा है। आकड़ों के अनुसार यदि नियंत्रण बढ़ते CO_2 के उत्सर्जन पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो थह आवंका है की 2020 तक इंडिया गोविंदा में बड़ा उद्धाल आयीगा जो की पर्यावरण पर कुरा प्रभाव डाल सकता है।

CO_2 की स्तर में बढ़ीती "ग्रीन हाउस गैस प्रभाव" का कारक है, जो सभी ग्रीन हाउस गैस (हीलोकार्बन, CO_2 मीठी और जल) धर्मानुष्ठान को अवगारिष्ट करता है। तथा सभी दिग्गजों में किंतु दृष्टिकोण और पृथ्वी के साथ पर वापस आ जाता है।

जिसके दातह का तापमान लें कर हालीका गमिरों का मुख्य कारण बनता है।



धातक परिणाम

मीन हाउस गैस की गई हीति है जो पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश कर यहाँ का तापमान बढ़ाने में कारक बनती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार चलता रहा तो वी भाताबी में पृथ्वी का तापमान डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत धातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बिही वर्षों की घाटी पिछले आँगनी, भारी तबाही मचेगी। हमरे ग्रह पृथ्वी कीला भी वह स्थिति बहुत होनिकारक होगी।

हलोकल वार्मिंग का समाधान (या) श्रीकन्ते का उपाय

शरकारी एजेंसियों द्वारा प्रधान निष्ठि और NGOs आदी द्वारा बहुत से कार्यक्रम, हलोकल वार्मिंग काम करने के लिए चलारे जाना दिया जा रहा है।

हलोकल वार्मिंग के बजह से पहुंचने वाले क्षति में कुछ भति रही है जिसे किसी भी समाधान के माध्यम से पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

जो भी हो ही रखना नहीं चाहिए और सबको बैठक प्रयार करना चाहिए हलोकल वार्मिंग के प्रभाव को कम करने के लिए ही इन हाउस गेंस का उत्सर्जन करना चाहिए तथा गतावरण में ही ही कुछ अल्पात्मक परिवर्तन जो वर्षों से चला आ रहा है उन्हे अपवाने की जोड़ी जानी चाहिए।

जैवानिकी और पर्यावरणविदी का कहना है कि हलोकल वार्मिंग में कमी के लिए गुण्डा रूप से श्री. राफ. श्री. मर्शो का उत्सर्जन शैक्षा होगा और डॉकेलिए फ्रिज, रायोंडोफ्रिजर और दुग्धे के लिए मर्शी का छस्तीगाल करना होगा या ऐसी मर्शी का उपयोग करना होगा जिससे श्री. राफ. श्री. मर्शी का निकाल हो।

निष्कर्ष

हलोविन वामिंग कम करने के उपाय हमें बिजली
के स्थान पर स्वच्छ ऊर्जा जैसी सौर ऊर्जा प्रयोग
ऊर्जा तथा शू-तापिय ऊर्जा द्वारा उत्पादित ऊर्जा
का उपयोग करना चाहिए। कीथला, तील के जलने
के स्तर को कम करना चाहिए कीयला, तील
के जलने के स्तर को कम करना चाहिए, परिवहन
और ईलेक्ट्रिक उपकरणों का उपयोग कम चाहिए
इससे हलोविन वामिंग का स्तर काफी हुए रूप कम
होगा।